दैनिक भास्कर
सूरत 20-06-2024

विश्व सिकलसेल दिवस • अंकलेश्वर के कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल में डॉक्टरों ने बीमारी के प्रति किया जागरूक

आदिवासी इलाकों में सिकलसेल बीमारी के केस अधिक मिलते हैं, डॉक्टरों ने कहा- इस रोग की जांच आवश्यक

हेल्थ रिपोर्टर | सूरत

विश्व सिकलसेल दिवस के मौके पर अंकलेश्वर के कर्मचारी राज्य बीमा निगम अस्पताल में सिलकसेल बीमारी जागरुकता अभियान कार्यक्रम हुआ। इस दौरान चिकित्सा अधीक्षक डॉ. पीएस पणिक्कर के मार्गदर्शन और उप चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अर्केश शाह की उपस्थिति में कर्मचारियों को जागरूक किया गया। विभागाध्यक्ष शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. नीलिमा अग्रवाल ने पीपीटी के माध्यम से सिलकसेल बीमारी के लक्षण, उपचार और बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान डिस्पेंसरी डी-2 के डॉ. डेक्सटर ने सिलकसेल बीमारी की स्क्रीनिंग और टेस्ट किट के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी दी। डॉ. नीलिमा अग्रवाल ने बताया कि कार्यक्रम में 50 से ज्यादा लोग मौजूद रहे। उन्होंने बताया कि आदिवासी इलाकों में सिलकसेल के मामले अधिक पाए जाते हैं। शादी से पहले इसकी जांच करवानी चाहिए। गर्भ में पल रहे बच्चे की भी जांच करवानी चाहिए, ताकि इससे बचा जा सके। उन्होंने बताया कि ज्यादातर लोगों को इस अनुवांशिक बीमारी के बारे में जानकारी नहीं है, इसलिए पीपीटी द्वारा लोगों को जागरूक किया गया।

स्वास्थ्य विभाग ने 9 तालुकाओं में सिकलसेल बीमारी की 97 प्रतिशत स्क्रीनिंग, सर्वाधिक 1088 मरीज मांडवी में

विश्व सिकलसेल दिवस के मौके पर शहर सहित मंगरोल, बारडोली, महुवा, मांडवी, उमरपाड़ा, चौर्यासी, पलसाणा, कामरेज और ओलपाड तालुकाओं में 97.21 प्रतिशत सिकलसेल स्क्रीनिंग की गई। स्वास्थ्य विभाग द्वारा अब तक इन इलाकों मे मई-2024 तक 1567860 लोगों यानी 97.21 प्रतिशत की सिकलसेल स्क्रीनिंग की जा चुकी है। जिसमें 29027 सिकलसेल लक्षण एवं 3365 सिकलसेल रोग के मरीज पाए गए। इसमें मांडवी तालुका में सबसे ज्यादा 1088 सिकलसेल रोग के मरीज, उमरपाड़ा में 605, महुवा में 543, मांगरोल में 431 और बारडोली में 339 मरीज हैं। सिविल अस्पताल के मेडिसिन विभाग के प्रमुख डॉ. केएन. भट्ट ने बताया कि सिकलसेल एक वंशानुगत बीमारी है, जो आदिवासी इलाकों में आम है। चौधरी, वसावा, गामित और अन्य जातियां दक्षिण गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में पाई जाती हैं।